# सप्तमः पाठः

# सङ्कल्पः सिद्धिदायकः

*(पार्वती शिवं पतिरूपेण अवाञ्छत्। एतदर्थं सा तपस्यां कर्तुम् ऐच्छत्। सा स्वकीयं मनोरथं मात्रे न्यवेदयत्। तत् श्रुत्वा माता मेना चिन्ताकुला अभवत्।)*

मेना – वत्से! मनीषिताः देवताः गृहे एव सन्ति। तपः कठिनं भवति। तव शरीरं सुकोमलं वर्तते। गृहे एव वस। अत्रैव तवाभिलाषः सफलः भविष्यति।

पार्वती – अम्ब! तादृशः अभिलाषः तु तपसा एव पूर्णः भविष्यति। अन्यथा तादृशं पतिं कथं प्राप्स्यामि। अहं तपः एव चरिष्यामि इति मम सङ्कल्पः।

मेना – पुत्रि! त्वमेव मे जीवनाभिलाषः।

पार्वती – सत्यम्। परं मम मनः लक्ष्यं प्राप्तुम् आकुलितं वर्तते। सिद्धिं प्राप्य पुनः तवैव शरणम् आगमिष्यामि। अद्यैव विजयया साकं गौरीशिखरं गच्छामि।

*(ततः पार्वती निष्क्रामति)*

*(पार्वती मनसा वचसा कर्मणा च तपः एव तपति स्म। कदाचिद् रात्रौ स्थण्डिले, कदाचिच्च शिलायां स्वपिति स्म। एकदा विजया अवदत्।)*

विजया – सखि! तपःप्रभावात् हिंस्रपशवोऽपि तव सखायः जाताः। पञ्चाग्नि-व्रतमपि त्वम् अतपः। पुनरपि तव अभिलाषः न पूर्णः अभवत्।

पार्वती – अयि विजये! किं न जानासि? मनस्वी कदापि धैर्यं न परित्यजति। अपि च मनोरथानाम् अगतिः नास्ति।

विजया – त्वं वेदम् अधीतवती। यज्ञं सम्पादितवती। तपःकारणात् जगति तव प्रसिद्धिः। 'अपर्णा' इति नाम्ना अपि त्वं प्रथिता। पुनरपि तपसः फलं नैव दृश्यते।

© NCERT not to be republished

पार्वती – अयि आतुरहृदये! कथं त्वं चिन्तिता ………।

*(नेपथ्ये–अयि भो! अहम् आश्रमवटुः। जलं वाञ्छामि।)*

*(ससम्भ्रमम्)* विजये! पश्य कोऽपि वटुः आगतोऽस्ति।

*(विजया झटिति अगच्छत्, सहसैव वटुरूपधारी शिवः तत्र प्राविशत्)*

विजया – वटो! स्वागतं ते। उपविशतु भवान्। इयं मे सखी पार्वती। शिवं प्राप्तुम् अत्र तपः करोति।

वटुः – हे तपस्विनि! किं क्रियार्थं पूजोपकरणं वर्तते, स्नानार्थं जलं सुलभम्, भोजनार्थं फलं वर्तते? त्वं तु जानासि एव शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

*(पार्वती तूष्णीं तिष्ठति)*

वटुः – हे तपस्विनि! किमर्थं तपः तपसि? शिवाय?

*(पार्वती पुनः तूष्णीं तिष्ठति)*

विजया – *(आकुलीभूय)* आम्, तस्मै एव तपः तपति।

*(वटुरूपधारी शिवः सहसैव उच्चैः उपहसति)*

वटुः – अयि पार्वति! सत्यमेव त्वं शिवं पतिम् इच्छसि? (उपहसन्) नाम्ना

शिवः अन्यथा अशिवः। श्मशाने वसति। यस्य त्रीणि नेत्राणि, वसनं व्याघ्रचर्म, अङ्गरागः चिताभस्म, परिजनाश्च भूतगणाः। किं तमेव शिवं पतिम् इच्छसि?

पार्वती – *(क्रुद्धा सती)* अरे वाचाल! अपसर। जगति न कोऽपि शिवस्य यथार्थं स्वरूपं जानाति। यथा त्वमसि तथैव वदसि।

*(विजयां प्रति)* सखि! चल। यः निन्दां करोति सः तु पापभाग् भवति एव, यः शृणोति सोऽपि पापभाग् भवति।

*(पार्वती द्रुतगत्या निष्क्रामति। तदैव पृष्ठतः वटोः रूपं परित्यज्य शिवः तस्याः हस्तं गृह्णाति। पार्वती लज्जया कम्पते)*

शिवः – पार्वति! प्रीतोऽस्मि तव सङ्कल्पेन। अद्यप्रभृति अहं तव तपोभिः क्रीतदासोऽस्मि।

*(विनतानना पार्वती विहसति)*

# शब्दार्थाः

| | | | |
|---|---|---|---|
| **पतिरूपेण** | – | पति के रूप में | as husband |
| **एतदर्थम्** (एतद्+अर्थम्) | – | इसके लिये | for this |
| **अवाञ्छत्** | – | चाहती थी | desired |
| **मात्रे** | – | माता से | to mother |
| **चिन्ताकुला** | – | चिन्ता से परेशान | perturbed by anxiety |
| **मनीषिता** | – | चाहा गया, इच्छित | desired |
| **तादृशः** | – | वैसा | like |
| **अभिलाषः** | – | इच्छा | desire |
| **तपसा** | – | तपस्या से | by penance |
| **प्राप्स्यामि** | – | प्राप्त करूँगी | will get |
| **जीवनाभिलाषः** (जीवन+अभिलाषः) | – | जीवन की चाह | life's desire |
| **आकुलितम्** | – | परेशान | desperate |
| **साकम्** | – | साथ | with |
| **निष्क्रामति** | – | निकल जाती है | goes out, exits |
| **मनसा** | – | मन से | by heart/ mind |
| **वचसा** | – | वचन से | by word |
| **कर्मणा** | – | कर्म से | by act |
| **तपति स्म** | – | तपस्या करती थी | performed penance |
| **स्थण्डिले** | – | नंगी भूमि पर | on barren field |

© NCERT not to be republished

| | | | |
|---|---|---|---|
| शिलायाम् | – | चट्टान पर | on rock |
| स्वपिति स्म | – | सोती थी | slept (took rest) |
| तपःप्रभावात् | – | तपस्या के प्रभाव से | because of penance |
| अतपः | – | तपस्या की | performed penance |
| अगतिः | – | गतिहीनता | absence of movement |
| अधीतवती | – | पढ़ ली | studied |
| सम्पादितवती | – | सम्पन्न किया | performed |
| प्रथिता | – | प्रसिद्ध हो गयी | became famous |
| आतुरहृदये | – | हे व्याकुल हृदयवाली | agitated one |
| नेपथ्ये | – | परदे के पीछे से | from backstage |
| आश्रमवटुः | – | आश्रम का ब्रह्मचारी | pupil from hermitage |
| झटिति | – | जल्दी से | quickly |
| क्रियार्थम् | – | तप के लिये | for penance |
| पूजोपकरणम् (पूजा+उपकरणम्) | – | पूजा की सामग्री | means for worship |
| सुलभम् | – | आसानी से प्राप्त | easily available |
| धर्मसाधनम् | – | धर्म का साधन | means of religious work |
| तूष्णीम् | – | चुप | silent |
| आकुलीभूय | – | परेशान होकर | being disturbed |
| उपहसति | – | उपहास करता है | makes fun |
| अन्यथा | – | अन्य प्रकार से | otherwise |

© NCERT not to be republished

| | | | |
|---|---|---|---|
| **श्मशाने** | – | श्मशान में | in the cremation ground |
| **अङ्गरागः** | – | अङ्गलेप | anointment |
| **परिजनाः** | – | मित्र गण | friends |
| **भूतगणाः** | – | भूतों की टोली | hosts of ghosts |
| **वाचाल** | – | बड़बोला | babbler |
| **अपसर** | – | दूर हट | keep away |
| **यथार्थम्** | – | वास्तविक | true/real |
| **पापभाग्** | – | पापी | sinful |
| **पृष्ठतः** | – | पीछे से | from behind |
| **परित्यज्य** | – | छोड़कर | after leaving |
| **कम्पते** | – | काँपती है | trembles |
| **प्रीतः** | – | प्रसन्न | pleased |
| **सङ्कल्पेन** | – | सङ्कल्प से | with firm desire |
| **अद्यप्रभृति** | – | आज से | from today |
| **क्रीतदासः** | – | खरीदा हुआ नौकर | a slave |
| **विनतानना** | – | नीचे की ओर मुँह की हुई | keeping downward face |
| **विहसति** | – | मुस्कुराती है | smiles |

© NCERT not to be republished

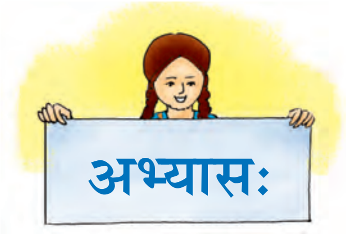


**1. उच्चारणं कुरुत-**

| | | |
|---|---|---|
| अभवत् | अकथयत् | अगच्छत् |
| न्यवेदयत् | अपूजयत् | स्वपिति |
| तपति | प्राविशत् | अवदत् |
| वदति स्म | वसति स्म | रक्षति स्म |
| वदति | चरति स्म | करोति स्म |
| गच्छति स्म | अकरोत् | पठति स्म |

**2. उदाहरणम् अनुसृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत-**

| (क) | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| यथा- | वसति स्म | वसतः स्म | वसन्ति स्म |
| | पूजयति स्म | ................ | ................ |
| | ................ | रक्षतः स्म | ................ |
| | चरति स्म | ................ | ................ |
| | ................ | ................ | कुर्वन्ति स्म |

| (ख) | पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|---|
| यथा- | प्रथमपुरुषः | अकथयत् | अकथयताम् | अकथयन् |
| | प्रथमपुरुषः | ................ | अपूजयताम् | अपूजयन् |
| | प्रथमपुरुषः | अरक्षत् | ................ | ................ |

© NCERT not to be republished

| (ग) पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| --- | --- | --- | --- |
| यथा– मध्यमपुरुषः | अवसः | अवसतम् | अवसत |
| मध्यमपुरुषः | ................. | अपूजयतम् | ................. |
| मध्यमपुरुषः | ................. | ................. | अचरत |

| (घ) पुरुषः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
| --- | --- | --- | --- |
| यथा– उत्तमपुरुषः | अपठम् | अपठाव | अपठाम |
| उत्तमपुरुषः | अलिखम् | ................. | ................. |
| उत्तमपुरुषः | ................. | अरचयाव | ................. |

**3. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत–**

(क) तपःप्रभावात् के सखायः जाताः?

(ख) पार्वती तपस्यार्थं कुत्र अगच्छत्?

(ग) कः श्मशाने वसति?

(घ) शिवनिन्दां श्रुत्वा का क्रुद्धा जाता?

(ङ) वटुरूपेण तपोवनं कः प्राविशत्?

**4. कः/का कं/कां प्रति कथयति–**

| | कः/का | कम्/काम् |
| --- | --- | --- |
| यथा– वत्से! तपः कठिनं भवति? | माता | पार्वतीम् |
| (क) अहं तपः एव चरिष्यामि। | | |
| (ख) मनस्वी कदापि धैर्यं न परित्यजति। | ............. | ............. |
| (ग) अपर्णा इति नाम्ना त्वं प्रथिता। | ............. | ............. |
| (घ) पार्वति! प्रीतोऽस्मि तव सङ्कल्पेन। | ............. | ............. |
| (ङ) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्। | ............. | ............. |
| (च) अहं तव क्रीतदासोऽस्मि। | ............. | ............. |

**5. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-**

(क) पार्वती क्रुद्धा सती किम् अवदत्?

(ख) कः पापभाग् भवति?

(ग) पार्वती किं कर्त्तुम् ऐच्छत्?

(घ) पार्वती कया साकं गौरीशिखरं गच्छति?

**6. मञ्जूषातः पदानि चित्वा समानार्थकानि पदानि लिखत-**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| माता | मौनम् | प्रस्तरे | जन्तवः | नयनानि |

शिलायां ..................

पशवः ..................

अम्बा ..................

नेत्राणि ..................

तूष्णीम् ..................

**7. उदाहरणानुसारं पदरचनां कुरुत-**

**यथा** –वसति स्म = अवसत्

(क) पश्यति स्म = ......................

(ख) तपति स्म = ......................

(ग) चिन्तयति स्म = ......................

(घ) वदति स्म = ......................

(ङ) गच्छति स्म = ......................



© NCERT not to be republished

यथा- अलिखत् = लिखति स्म।

(क) ................ = कथयति स्म।

(ख) ................ = नयति स्म।

(ग) ................ = पठति स्म।

(घ) ................ = धावति स्म।

(ङ) ................ = हसति स्म।

## ध्यातव्यम्

'स्म' इत्यस्य प्रयोगः।

यदा वर्तमानकालिकैः धातुभिः सह 'स्म' इत्यस्य प्रयोगः भवति तदा ते धातवः भूतकालिकक्रियाणाम् अर्थं प्रकटयन्ति।

यथा- पठति स्म - पढ़ता था।

गच्छति स्म - जाता था।

पञ्चाग्निव्रतम् - चतसृषु दिक्षु अग्निम् आधाय सूर्यस्य निर्निमेषदर्शनं पञ्चाग्निव्रतम्।

अपर्णा - तपस्याक्रमे पर्णानामपि भक्षणं पार्वती त्यक्तवती अतः सा अपर्णा नाम्ना प्रसिद्धा।

© NCERT not to be republished